एस्सार, भूषण स्टील और इलेक्ट्रोस्टील का दीवाला-मामला एनसीएलटी में

देव चटर्जी, अभिजित लेले और ईशिता आयान दत्त

मुंबई/कोलकाता। भारतीय स्टेट बैंक की अगुआई में बैंकों ने कर्ज में फंसी तीन बड़ी कंपनियों भूषण स्टील, एस्सार स्टील और इलेक्ट्रोस्टील स्टील्स के लिए दिवालिया प्रक्रिया शुरू कर दी और ऋणशोधन अक्षमता एवं दिवाला संहिता के तहत आगे कार्रवाई के लिए उसे राष्ट्रीय कंपनी लॉ ट्रिब्यूनल के पास आज भेज दिया। इन तीनों कंपनियों पर करीब 1 लाख करोड़ रुपये का कर्ज है, जिसे बैंकों ने फंसा हुआ कर्ज माना है।

वित्त वर्ष 2015-16 के अंत तक गैर-सूचीबद्ध कंपनी एस्सार स्टील पर 37,284 करोड़ रुपये का कर्ज है जबकि भूषण स्टील पर 44,478 करोड़ रुपये का कर्ज था। इन दोनों कंपनियों के अद्यतन वित्तीय आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं लेकिन बैंकरों का कहना है कि पिछले एक साल में कर्ज और बढ़ा है। कोलकाता की कंपनी इलेक्ट्रोस्टील स्टील्स पर मार्च 2016 तक 10,274 करोड़ रुपये का कर्ज था। भारतीय रिजर्व बैंक ने 2015-16 में कर्ज की स्थिति के आधार पर फंसे ऋण वाली संपत्तियों को छांटा है।

हालांकि पिछले एक साल के दौरान स्टील की कीमतों में वृद्धि और चीन से सस्ते आयात पर शुल्क लगाए जाने से इस क्षेत्र की स्थिति में सुधार हुआ है। लेकिन संकट से निकलने के लिए यह पर्याप्त नहीं है। एक बैंकर ने नाम उजागर नहीं करने की शर्त पर कहा कि कुछ स्टील कंपनियां ब्याज का भुगतान कर पा रही हैं लेकिन मूलधन चुकाने में वे सक्षम नहीं हैं। इसके लिए स्टील की कीमतों में और तेजी की जरूरत है। उन्होंने कहा कि स्थिति में तभी सुधार होगा जब खासकर निर्माण एवं बुनियादी ढांचा क्षेत्रों से मांग बढ़ेगी।

भारतीय स्टेट बैंक के अधिकारी ने कहा कि एसबीआई कैपिटल मार्केट्स पहले से ही कुछ बड़ी स्टील कंपनियों के पुनर्गठन पर काम कर रही है और इस योजना को राष्ट्रीय कंपनी लॉ ट्रिब्यूनल के समक्ष ले जा सकती है। कंपनियां बीते समय में बैंकों को कर्ज पुनर्गठन का प्रस्ताव दिया था लेकिन बैंक इस डर से उस पर कोई निर्णय नहीं ले रहे थे कि भविष्य में जांच एजेंसियां उनके खिलाफ कार्रवाई कर सकती हैं।

एस्सार के प्रस्ताव के अनुसार कंपनी 2,500 करोड़ रुपये का ताजा इक्विटी निवेश करेगी, जिनमें से प्रवर्तकों का योगदान 800 करोड़ रुपये का होगा और 1,700 करोड़ रुपये निजी इक्विटी साझेदारों से जुटाए जाने थे। इसके बाद बैंक अपने कर्ज के एक हिस्से को इक्विटी में बदल सकते हैं। इससे कंपनी में प्रवर्तकों की हिस्सेदारी 100 फीसदी से घटकर 44 फीसदी रह जाएगी।

भूषण स्टील ने भी ऋणदाताओं को दो प्रस्ताव दिए थे। कंपनी ने एस4ए योजना के तहत कर्ज पुनर्गठन का प्रस्ताव सौंपा था। इसमें कहा गया था करीब करीब 52 फीसदी कर्ज चुकाया जा सकता है। जनवरी में जेएसडब्ल्यू स्टील 25,000 करोड़ रुपये से ज्यादा की रकम में भूषण स्टील के कर्ज और परिसंपत्तियों के अधिग्रहण का प्रस्ताव लेकर बैंकों के पास गई थी। दूसरी ओर इलेक्ट्रोस्टील स्टील्स ने अभिषेक डालमिया के रेनेसां समूह से ताजा इक्विटी निवेश करने और एडलवाइस से 1,500 करोड़ रुपये का कर्ज जुटाने की योजना बनाई थी। इन सभी प्रस्तावों के साथ ही अन्य प्रस्तावों पर राष्ट्रीय कंपनी लॉ ट्रिब्यूनल में चर्चा की जाएगी।

जर्मनी से होगी अफगान नागरिकों की घर वापसी

कुछ हफ्तों के अंतराल के बाद एक बार फिर जर्मनी से अफगानी शरणार्थियों को लौटाये जाने का सिलसिला शुरु होने जा रहा है। वापसी एक हफ्ते में शुरु होने की संभावना है।

काबुल में सिलसिलेवार हमलों के बाद जर्मनी से अफगान शरणार्थियों को लौटाये जाने का कार्यक्रम अस्थायी रूप से रोक दिया गया था। कुछ हफ्तों की रोक के बाद एक बार फिर जर्मन सरकार उन्हें लौटाये जाने की प्रक्रिया शुरु कर सकती है। एक हफ्ते के भीतर उन्हें जर्मनी से अफगानिस्तान भेजे जाने के लिए कई और विमानों का इंतजाम किया जा रहा है। यह ऐसे अफगानी नागरिक हैं जिसका जर्मनी में शरण का आवेदन अस्वीकार कर दिया गया है।

जून की शुरुआत में ही अफगानिस्तान की राजधानी में बहुत बड़ा आत्मघाती हमला हुआ था। इसके बाद जर्मनी की केंद्रीय और राज्य सरकारों ने निर्वासन की प्रक्रिया को स्थगित करने का फैसला किया था। तय किया गया था कि पहले जर्मन विदेश मंत्रालय अफगानिस्तान में सुरक्षा हालातों का मूल्यांकन करेगा और उसी के आधार पर फिर से प्रक्रिया शुरु करने का समय चुना जाएगा। जर्मन चांसलर अंगेला मैर्केल ने कहा था कि यह प्रक्रिया जुलाई तक स्थगित रखी जा सकती है।

लेकिन जर्मनी की स्थानीय मीडिया रिपोर्टों में दावा किया गया है कि काबुल के लिए ऐसी पहली उड़ान सात दिन के भीतर भेजी जा सकती है। अभी तक इन खबरों की सरकार की ओर से पुष्टि नहीं की गयी है।

मैर्केल ने कहा था कि ऐसे अफगानियों को लौटाया जाना जारी रहेगा, जिन्होंने अपराध किया है, किसी तरह से सुरक्षा के लिए खतरा बन सकते हैं या जो अपनी सही पहचान जाहिर नहीं कर रहे हैं। कई जर्मन नेता मैर्केल सरकार की इस नीति की आलोचना करते आये हैं कि उन्होंने अफगानिस्तान में सुरक्षा कारणों का हवाला देकर उनके निर्वासन को क्यों रोका।

अफगानिस्तान में कट्टरपंथी इस्लामिक अभियान चलाने वाले ज्यादातर पश्तून मूल के निवासी हैं। उनका देश के चालीस फीसदी इलाके पर या तो कब्जा है या काफी प्रभाव है। करीब सोलह साल पहले अमरीका के नेतृत्व में अफगानिस्तान पर हुए हमले के बावजूद वो इलाके में अपनी मजबूत स्थिति को बरकरार रखे हुए हैं। जर्मन साप्ताहिक अखबार डी वेल्ट अम सोनटाग ने केंद्रीय पुलिस के हवाले से आंकड़ा दिया है कि 2017 के पहले चार महीनों में जर्मनी ने 8,620 विफल अफगान शरणार्थी आवेदनकर्ताओं को लौटाया गया था। इसके अलावा अप्रैल तक ही 11,195 नाकाम शरणार्थी स्वेच्छा से देश वापस चले गये थे। बीते पूरे साल में 25,000 से भी अधिक अफगानी निर्वासित किये गये थे। इनके अलावा करीब 54,006 लोग खुद वापस लौट जाने के वॉलंटरी प्रोग्राम के तहत यात्रा का किराया लेकर अपने देश चले गये थे। (अलेस्टेयर वाल्श/आरपी)

आज कल

जब पिता ने सुनी अपनी मृत बेटी की धड़कन

अमरीका, 23 जून (बीबीसी)। बिल कॉनर ने जब लॉमंथ जैक के सीने पर स्टेथेस्कोप लगाकर धड़कनें सुनीं तो वह रो पड़े, बेटी तो नहीं रही, पर उसका दिल जिंदा है।

वह दिल अब एक दूसरे आदमी के सीने में धड़क रहा है और जब बेटी के पिता ने उसकी धड़कनें सुनीं तो वह आंसुओं को रोक नहीं सके। इस दिल छूने वाली घटना की तस्वीरें सामने आई हैं।

अपनी मृत बेटी के दिल की धड़कनें सुनने के लिए बिल कॉनर दो हजार किलोमीटर साइकिल चलाकर अमरीका के विस्कॉन्सिन राज्य से लुइजियाना राज्य के बैटन रूज पहुंचे थे।

उन्होंने जब लॉमंथ जैक के सीने में स्टेथेस्कोप लगाया तो वह भावुक होकर रोने लगे। लॉमंथ जैक को दिल का दौरा पड़ा था और डॉक्टरों ने कह दिया था कि उनके पास कुछ ही दिन बचे हैं। लेकिन कॉनर की बेटी ऐबी ने अपनी मौत से पहले अंगदान का ऐलान किया था और इस तरह उन्हें ट्रांसप्लांट के जरिये दिल मिल गया।

बिल कॉनर ने सीबीएस न्यूज से कहा, यह जानना कि वह मेरी बेटी ऐबी की वजह से जिंदा है- मेरी बेटी भी उसके भीतर जिंदा है। वह उसके दिल की बदौलत आज सीधा खड़ा हुआ है। उन्होंने कहा, मैं उसके और उसके परिवार के लिए खुश हूं। मुझे अपनी बेटी से मिलने का मौका मिल गया।

ऐबी कॉनर की मेक्सिको के एक स्विमिंग पूल में मौत हो गई थी। इसी जनवरी में 20 साल की ऐबी और उसका भाई कैनकुन के एक रिजॉर्ट में एक स्वीमिंग पूल में बेहोशी की हालत में मिले थे। वे वहां छुट्टियां मनाने गए थे।

इसके बाद उन्हें फ्लोरिडा के एक अस्पताल ले जाया गया। ऐबी के भाई की जान बच गई। लेकिन ऐबी के अंगों का ट्रांसप्लांट के लिए इस्तेमाल करने तक डॉक्टरों ने उसके शरीर को लाइफ सपोर्ट सिस्टम पर रखा। कॉनर कहते हैं कि ऐबी ने 16 साल की उम्र में ही अंगदान करने का फैसला कर लिया था। उन्होंने कहा, उसने रजिस्टर कर दिया था। उसे बहुत पहले ही यह पता लग गया था। दुर्भाग्य से यह सच हो गया। **(बाकी पेज 18 पर)**

PIXTOON छायाव्यंग्य

एनडीए को डर है कि कहीं मीरा कुमार बार-बार यह न कहने लगें कि बैठ जाईए-बैठ जाईए और रामनाथ कोविंद सचमुच न बैठ जाएं..

https://www.facebook.com/DailyChhattisgarh

न्यूटन और आइंस्टाइन से क्या सीखना चाहिए ?

जारिया गोर्वेट

नई दिल्ली, 23 जून (बीबीसी)। दुनिया भर की महान शख्सियतों में सबसे ज्यादा खब्ती शायद मशहूर वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंसटाइन थे। हम महान, काबिल और अक्लमंद लोगों से बहुत कुछ सीख सकते हैं। उनके काम करने का तरीका और उनकी आदतें ही शायद उन्हें महान बनाती हैं। मगर बहुत से बुद्धिमान लोगों को अजीबो-गरीब आदतें भी होती हैं। तो क्या इन्हीं आदतों ने उन्हें इतनी ऊंचाई तक पहुंचाया था ?

और क्या मशहूर शख्सियतों की ऐसी अजीबो-गरीब आदतों को सीख कर हम भी उन्हीं की तरह कामयाब हो सकते हैं। पहले आपको कुछ महान शख्सियतों की ऐसी कुछ आदतों के बारे में बताते हैं। बीसवीं सदी के महान आविष्कारक निकोला टेस्ला हर रात अपने अंगूठों को घुमाने की वर्जिश करते थे।

हर पैर के अंगूठे को वो कम से कम सौ बार घुमाते थे। टेस्ला का दावा था कि इससे उनके दिमाग की कोशिकाएं सक्रिय हो जाती हैं! बीसवीं सदी के महान गणितज्ञ कहे जाने वाले पॉल अर्दोस एम्फेटामाइन नाम के केमिकल की मदद से अंकों की पहेलियां सुलझाते थे।

एक बार एक दोस्त ने पॉल से कहा कि वो एक महीने तक एम्फेटामाइन न लें, तो वो पांच सौ डॉलर देंगे। पॉल ऐसा करने में कामयाब रहे। लेकिन उन्होंने दोस्त से कहा कि उन्होंने गणित को एक महीने पीछे धकेल दिया। इसी तरह महान ब्रिटिश भौतिक विज्ञानी न्यूटन का अपना खब्त था।

वो मानते थे कि इंसान को शादी नहीं करनी चाहिए। सेक्स से दूर रहना चाहिए। माना जाता है कि न्यूटन ने जिंदगी भर अपने इस खब्त को निभाया। आज हम न्यूटन के कितने बड़े कर्जदार हैं, बताने की बात नहीं। निकोलस टेस्ला भी जिंदगी भर बिना शादी और सेक्स के रहे।

हालांकि बाद में टेस्ला ने दावा किया था कि उन्हें एक कबूतर से मुहब्बत हो गई थी! दुनिया के बहुत से वैज्ञानिकों को ऐसे खब्त रहे हैं। जैसे कि ईसा पूर्व के गणितज्ञ पाइथागोरस को बीन्स के इस्तेमाल से ऐतराज था। इसी तरह अमरीकी वैज्ञानिक बेंजामिन फ्रैंकलिन नंगे बदन रहकर एयर बाथ यानी वायु-स्नान किया करते थे।

तो क्या अक्लमंद लोगों को ऐसे ही खब्त होते हैं ? क्या इसी की वजह से वो महानता की पायदान पर इतने ऊंचे दर्जे पर पहुंच पाते हैं ? वैज्ञानिक मानते हैं कि किसी के बेहद अक्लमंद होने की सबसे बड़ी वजह आस-पास का माहौल होता है। रोजमर्रा की आदतें भी किसी इंसान को महानता की सीढ़ियां चढ़ने में मदद करती हैं।

दुनिया भर की महान शख्सियतों में सबसे ज्यादा खब्ती शायद मशहूर वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंसटाइन थे। तो क्या हम उनकी अजीबो-गरीब आदतों से कुछ सीखकर आइंस्टाइन जैसे बन सकते हैं ? चलिए पता लगाने की कोशिश करते हैं।

दस घंटे की नींद और छोटी-छोटी झपकिया- हम सबको मालूम है कि अच्छी नींद हमारे दिमाग के बेहतर काम करने के लिए बेहद जरूरी है। आइंस्टाइन तो रोजाना दस घंटे सोते थे। जबकि आज की तारीख में एक अमरीकी औसतन 6.8 घंटे ही सोता है।

मशहूर लेखकर जॉन स्टीनबेक का कहना था कि बहुत सी मुश्किलों का हल रात में सोने से निकल आता है। नींद की कमेटी जब रात में बैठती है, तो मुश्किलों को चुटकियों में हल कर देती है। दुनिया के कई बड़े आविष्कर, विज्ञान की कई थ्योरीज सोते वक्त ही खयालों में आईं।

मसलन डीएनए की बनावट या आइंस्टाइन की थ्योरी ऑफ स्पेशल रिलेटिविटी। साल 2004 में जर्मनी की ल्यूबेक यूनिवर्सिट में कुछ लोगों को एक नंबर गेम सिखाने की कोशिश की गई। जिन लोगों को सोने का मौका दिया गया, उन्होंने ये खेल ज्यादा आसानी से सीख लिया। जब हम सोते हैं तो हमारा दिमाग, हल्की नींद से गहरी नींद तक के कई चक्रों से गुजरता है। **(बाकी पेज 18 पर)**

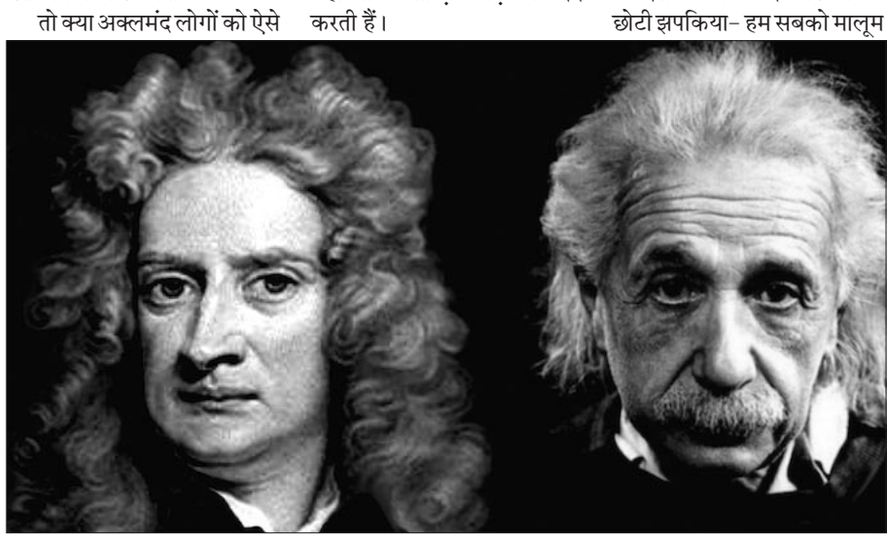

एक कतरा लेखन का...

सीखें उपन्यास लिखना-कुमार प्रशांत से

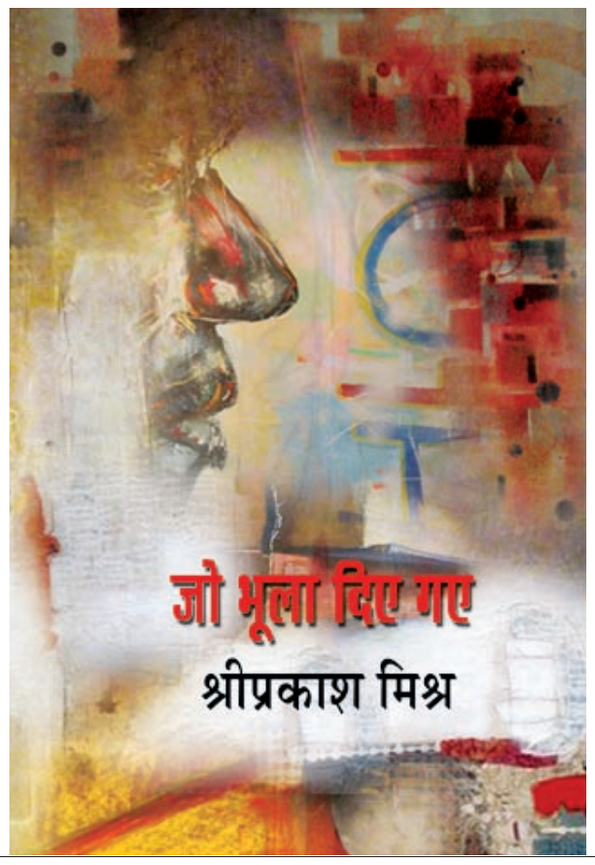

2013 में एक बढ़िया उपन्यास आया है 'जो भुला दिए गए'। उपन्यासकार हैं हिंदी के वरिष्ठ व सुयोग्य कवि और हिंदी की जरूरी पत्रिका उन्नयन के संपादक श्रीप्रकाश मिश्र। उपन्यास के कथानक के केंद्र में चौरी-चौरा कांड है। जैसा कि उपन्यासकार अपनी अत्यल्प भूमिका में कहते भी हैं- जन संघर्ष की मौखिक और अनिवार्य वृतांत। अर्थात् जन-दस्तावेज। इतिहास के धूल पड़े पृष्ठों से उजास तलाशने का पावन उपक्रम।

प्रख्यात इतिहासविद् लेखक प्रो. लाल बहादुर के अनुसार उपन्यास 'जो भुला दिए गए' मौखिक इतिहास का अप्रतिम उदाहरण है। महत्वपूर्ण कवि हरीश चंद्र पांडेय की मानें तो पात्रों का मौलिक विकास करने वाला विश्वसनीय उपन्यास। मान्य कवि मत्स्येंद्र शुक्ल पर विश्वास करें तो आजादी के आंदोलन को लेकर आज तक इतना महत्वपूर्ण उपन्यास नहीं लिखा गया। युवा कवि और आलोचक श्री रंग कहते हैं कि श्रीप्रकाश बहुत सधे तौर पर स्थितियों और पात्रों को गढ़ते हैं। कवि भाई रतीनाथ योगेश्वर से सुनलें। उपन्यास की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह महत्वपूर्ण रचना प्रक्रिया से निकली हुई कृति है। हिंदी के जिम्मेदार कवि-आलोचक ओम निश्चल इस उपन्यास को भला बिना पढ़े तो कहे नहीं होंगे कि ऐतिहासिक उपन्यासों की कड़ी में भी यों तो अनेक उपन्यास लिखे जा चुके हैं, किंतु प्रख्यायत चौरीचौरा कांड पर संभवत: पहला बड़ा उपन्यायस 'जो भुला दिए गए' आया है। सुपरिचित कथाकार-संपादक बलरामजी इस उपन्यास को सन् 2013 का उल्लेखनीय कृति बताते हैं। और इसी तारतम्य में मेरे जैसा छोटा मोटा पाठक भी इस उपन्यास को पुरातत्वीय तलाश से मिले हमारे उन ऐसे पूर्वजों के चेहरों को फिर निहारने का उद्यमिता कहता हूँ जिन्हें हम लगभग बिसार देना चाहते हैं। नास्टेल्जिया में नहीं, समय की चुनौचितों के मध्य एक अपरिहार्य स्मरण की तरह।

यह विरुदावली मैं (एकलव्य अकिंचन) उनके शिष्य बनने के लिए नहीं, (और वे कोई मेरा गुरुभाई भी नहीं) बल्कि उनके इसी उपन्यास पर आज हिंदी के प्रमुख पत्र जनसत्ता में कवि-कथाकार कुमार प्रशांत जी के मटियामेटी समीक्षा को पढ़कर आपसे अपनी बात कहना चाह रहा हूँ, और वह कि हिंदी की समीक्षा का यह लगभग इतिसिद्धम है कि यदि रचनाकार का चेहरा आपको नहीं सुहाता, या रचनाकार आपके स्कूल का विद्यार्थी नहीं है या आपसे जातीय दुश्मनी है तो उसकी बड़ी से बड़ी रचना को भी आप मिनटों में ध्वस्त कर सकते हैं।

आदरणीय कुमार प्रशांतजी को मैंने कभी पढ़ा नहीं। कभी देखा भी नहीं। उनके कुल गोत्र (औरों के भी) से भी मुझे कोई लेना देना नहीं रहा है। पर आज उनकी समीक्षा पढ़कर लगा कि वे साहित्य और समय से नाराज व्यक्ति हैं। मत भेद को मनभेद के अर्थों में लेनेवाले। देखें, वे इस उपन्यास को किस तरह खारिज करते हैं। उनकी अपवित्र वाणी के कुछ नमूने-

1. श्रीप्रकाश मिश्र ने इसे लिखना क्यों जरूरी समझा ?

2. हम इसे इतिहास मान कर पढ़ नहीं सकते और एक वृहद उपन्यास का तत्त्व इसमें खोज नहीं पाते हैं।

3. श्रीप्रकाश मिश्र ने बचपन में सुनी इस कथा को उपन्यास में ढालते हुए, इस बारे में निश्चित ही विचार किया होगा, लेकिन उसका कोई चिह्न उपन्यास में नहीं मिलता।

4. उपन्यासकार इतिहासकार से भिन्न भूमिका लेता है। वह सारे धूल-गर्द के साथ ही घटनाओं और पात्रों को हमें सौंप देता है। हम खुद ही धूल-गर्द के पीछे की सच्चाई को खोजते हैं। **(बाकी पेज 18 पर)**

मूंछों वाली मां यानी महान शिक्षाशास्त्री गिजुभाई बधेका

गोपाल राठी

गुजराती भाषा के लेखक और महान शिक्षाशास्त्री गिजुभाई बधेका के बारे में यह राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के उद्गार थे। आज पूरी दुनिया महात्मा गांधी के विचारों से सहमत है। गिजुभाई को आज पूरी दुनिया में बालशिक्षा का महान मौलिक चिन्तक माना जाता है। भारत से ज्यादा उनका अफ्रीकी और उन समाजवादी देशों में सम्मान है, जहां बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में शिक्षा को महत्वपूर्ण विकास का जरिया मानते हुए बाल पाठ्यक्रम रचे गए।

गिजुभाई कोई पेशे से शिक्षक नहीं थे। फिर भी छोटे बच्चों की शिक्षा को नई दिशा देने में उनका बेहद मौलिक योगदान है। वह बाल मनोविज्ञान को कितनी गहराई से आत्मसात करते थे, उनकी चिंता के केंद्र में रहीं इन पंक्तियों को पढ़िए-

मैं खेलूं कहां ? मैं कूदूं कहां ? मैं गाऊं कहां ? मैं किसके साथ बात करूं ? बोलता हूं तो मां को बुरा लगता है। खेलता हूं तो पिता खीझते हैं। कूदता हूं, तो वे जाने को कहते हैं। गाता हूं, तो चुप रहने को कहते हैं। अब आप ही कहिए कि मैं कहां जाऊं ? क्या करूं ? गिजुभाई ताउम्र इन सवालों से जूझते रहे।

आज पुण्यतिथि

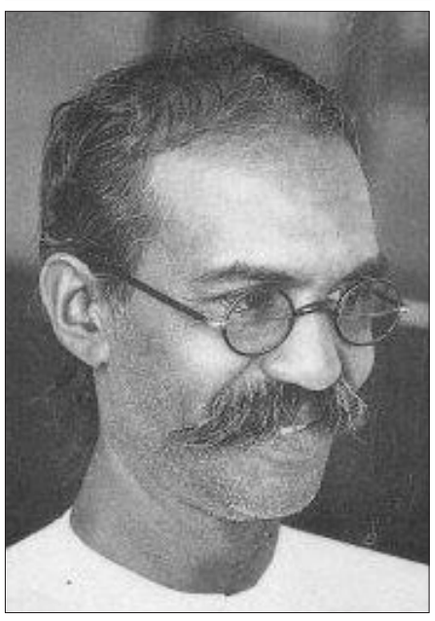

बच्चों को लेकर उनमें कितना ममत्व था, उसे इसी बात से समझा जा सकता कि उन्हें लोग प्यार में मोछाई मां यानी मूंछों वाली मां भी कहते थे। उनका जन्म 15 नवम्बर, 1885 को सौराष्ट्र के चित्तल नामक स्थान में हुआ था। गिजुभाई समाज सुधार और राष्ट्रीय महत्त्व के अन्य कामों में भी पूरी गंभीरता से रूचि लेते थे। बारदोली सत्याग्रह के समय लोगों की सहायता के लिए उन्होंने बच्चों की वानर सेना गठित की थी। बच्चों की वानर सेना ने इस आन्दोलन में बहुत महत्वपूर्ण योगदान दिया था। **(बाकी पेज 18 पर)**

इन पन्नों के लिए ईमेल- इन पन्नों के लिए एक नया ईमेल बनाया गया है, लेख, रिपोर्ट, कार्टून, फोटो, और अपनी प्रतिक्रिया इस पते पर ईमेल करें aajkal.chhattisgarh@gmail.com